IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

हरित अर्थव्यवस्था एवं सतत् विकास

Dr. Neeta Mishra

Guest Lecture

Department of Economics
Government V. Y. T. PG Autonomous College, Durg, Chhattisgarh, India

Abstract- वर्तमान समय में विकास के लिए जिन आयामों की आवश्यकता है उनमें सबसे प्रमुख हरित अर्थव्यवस्था के साथ विकास है, जो हमें धारणीय विकास में सहयोग प्रदान करेंगे। आज के समय में विकास के नाम पर पर्यावरण का विनाश किया जा रहा है, जिस पर नियंत्रण केवल हरित हरित अर्थव्यवस्था के साथ किया जा सकता है। प्राकृतिक संसाधनों के कुशल उपयोग, अपशिस्ट साधनों का प्रबंधन ,जीवों पेड़–पौधों, नदियों की सुरक्षा हरित अर्थव्यवस्था से ही संभव है, परन्तु इस कार्य हेतु कुछ चुनौतियां भी है, जैसे – पर्याप्त वित्त की आवश्यकता, तकनीकी सुविधाओं की उपलब्धता, लोगो में जागरूकता का होना। हरित अर्थव्यवस्था एक ऐसा माध्यम है जो प्रकृति को सुरक्षित रखने में सहयोग प्रदान करता है एवं लम्बे समय तक हमें विकास की ओर अग्रसर करता है। हरित अर्थव्यवस्था मानवीय, सामाजिक, भौतिक, एवं प्राकृतिक संसाधनों की सुरक्षा हेतु भी अति आवश्यक है।

IndexTerms - हरित अर्थव्यवस्था, विकास .

अर्थव्यवस्था के साथ सतत विकास इस बात की ओर संकेत करता है कि विकास हेतु उन आयामों को उपयोग में लाया जाए, जिसमें सार्वजानिक एवं निजी दोनों ही क्षेत्र कार्बन उत्सर्जन एवं प्रदूषण से मुक्त हो तथा जो जैवविविधता एवं पारिस्थितिक तंत्र को स्वस्थ रखे। विकास के दौर में हरित अर्थव्यवस्था को बनायें रखना स्वयं में एक बड़ी चुनौती बन चुकी है, जिसके लिए सरकार के साथ ही साथ आम लोगों को सक्रीय होने की आवश्यकता है। सिर्फ विकास हो और संतुलन बिगड़ता रहे, यह पर्यावरण के साथ खिलवाड़ की दशा है, अतः स्थायी एवं संतुलित विकास हमें हरित आर्थव्यवस्था से ही प्राप्त हो सकता है।

पर्यावरण संरक्षण हमारी आगामी पीढ़ी के लिए अति आवश्यक है, जिससे पुनः निर्माण, उर्जा–संरक्षण, जलवायु परिवर्तन, नियंत्रण एवं जैव विविधताओं को संरक्षण प्रदान करना। यह भी हरित अर्थव्यवस्था एवं सतत विकास का महत्वपूर्ण भाग है।

महत्व –

1. प्राकृतिक संसाधनों का कुशलता पूर्वक उपयोग होगा चूंकि धारणीय विकास पर कार्य हो रहा है।
2. अपशिष्ट साधनों के प्रबंध करने से पर्यावरण क्षति नियंत्रण संभव हो सकेगा।
3. विभिन्न प्रकार के पर्यावरणीय जीवों एवं पेड़–पौधों, नदियों को हरित आर्थव्यवस्था के कारण सुरक्षा की प्राप्ति होगी।
4. प्राकृतिक ऊर्जा जैसे–सौर उर्जा, पवन ऊर्जा के उपयोग को बढ़ावा मिलेगा।
5. जलवायु परिवर्तन नियंत्रण परिवर्तन को बढ़ाना।

चुनौतियां –

1. हरित अर्थव्यवस्था के साथ सतत विकास के लिए पर्याप्त वित्त की उपलब्धता होना आवश्यक है।
2. प्राकृतिक उर्जा स्त्रोतों को अपनाने में तकनिकी सुविधा की उपलब्धता।
3. विभिन्न हरित परियोजनाओ की शुरुआत।
4. अंतरराष्ट्रीय संगठनों से विभिन्न हरित अर्थव्यवस्था संबंधित आयामों को प्राप्त करना।

5. हरित अर्थव्यवस्था एवं धारणीय विकास हेतु लोगों में जागरूकता लाना।

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य –

1. आम जनता में हरित अर्थव्यवस्था के प्रति जागरूकता का अध्ययन।
2. हरित अर्थव्यवस्था के साथ सतत विकास की प्राप्ति।

प्रस्तुत अध्ययन की परिकल्पना –

1. वर्तमान में लोग हरित अर्थव्यवस्था के प्रति जागरूक हुए हैं।
2. हरित अर्थव्यवस्था के साथ विकास को अपना रहे हैं।

परिकल्पनाओं की पुष्टि –

किसी भी कथन को देते समय उस कथन से संबंधित आँकड़ों का होना अति आवश्यक है। इस बिंदु को ध्यान में रखते हुए हरित क्रांति के प्रति लोगों की जागरूकता को निम्न तालिका में प्रदर्शित किया गया है।

तालिका क्रमांक – 1

हरित अर्थव्यवस्था के प्रति जागरूकता

क्र.	जागरूकता	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	जागरूक है	170	85%
2.	जागरूक नहीं है	30	15%
	योग	200	100%

इस तालिका में दुर्ग शहर के 200 लोगों का हरित अर्थव्यवस्था के प्रति जागरूकता का अध्ययन किया गया है, जिसमें 170 व्यक्ति जागरूक पाए गए एवं 30 व्यक्ति हरित अर्थव्यवस्था के प्रति सजग नहीं है।

तालिका क्रमांक – 2

हरित अर्थव्यवस्था के साथ विकास

व्यावसायिक वर्गों में हरित अर्थव्यवस्था के साथ विकास को कहां तक आत्मसात किया जाता है, इसे निम्न तालिका द्वारा स्पष्ट किया गया है।

क्र.	हरित व्यवस्था के साथ विकास	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	विकास करते हैं	130	65%
2.	विकास नहीं करते हैं	70	35%
	योग	200	100%

निष्कर्ष –

दुर्ग के कुछ व्यावसायिक क्षेत्र का अध्ययन किया गया जिसमें वेल्डिंग शॉप, होटल, किराना दुकान, फर्नीचर शॉप, को लिया गया, जिसमें यह स्पष्ट हुआ की 130 लोग हरित अर्थव्यवस्था के साथ विकास चाहते हैं, बल्कि 70 लोग इस विषय पर ध्यान नहीं देते।

उपयोगिता –

1. परम्परागत कृषि से हरित कृषि में वृद्धि हुई है।
2. प्लास्टिक पॉलिथीन कचरे का सही विघटन किया जाने लगा है।
3. हरित अर्थव्यवस्था बेहतर स्वास्थ्य के लिए उपयोगी होती है।
4. पर्यावरण को सुरक्षा प्राप्त हुयी है।

सुझाव –

1. हरित अर्थव्यवस्था जन केंद्रित होनी चाहिए।
2. हरित अर्थव्यवस्था में मानवीय, सामाजिक, भौतिक एवं प्राकृतिक पूंजी भी शामिल होनी चाहिए।
3. हरित अर्थव्यवस्था उचित रोजगार के अवसर प्रदान करने योग्य हो। हरित अर्थव्यवस्था में पर्यावरण प्रदूषण पर भी विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।

विकास के चरण –

धारणीय विकास एवं सतत हरित अर्थव्यवस्था के लिए आवश्यक है कि इसे विशेष प्राथमिकता दी जाए। वैश्विक स्तर पर सामूहिक प्रयास किया जाए। जितने भी नवीन विकासात्मक योजनाएं बनाई जाती है उसमें पर्यावरणीय संतुलन को विशेष ध्यान में रखा जाना आवश्यक है, जिससे संतुलन की दशा नियमित बनी रहे।

समीक्षा –

प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करते हुए उनकी सुरक्षा एवं प्राकृतिक ऊर्जा का उपयोग करते हुए विकास करना वैश्विक स्तर पर भी आवश्यक है। प्रकृति सभी जगह प्रदूषित होती जा रही है, इसकी देखभाल करना सभी का दायित्व है। इसी दशा में हम लंबे समय तक विकास को प्राप्त कर सकते हैं।

संदर्भ सूची –

1. Environmental Economics An Indian Perspective - Edited by – Rabindra N. Bhattacharya
2. The Global Green Economy leading to Sustainability : A multidisciplinary Approach – chief Editors Dr. Pooja Shrivastav /Dr. Anchal Rastogi /Dr Pooja Bhatia
3. Wikipedia https://en.wikipedia.org
4. Internation Institute for Sustainable Development https://www.iisd.org
5. Sustainable Development https://sustainable.un.orgs

International Research Journal
IJNRD
Research Through Innovation